Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

युद्धों के लिए मेवाड़ का ऐतिहासिक महत्व : एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. नरेंद्र सिंह राणावत*

* सहायक आचार्य (इतिहास) सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी संकाय, भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – मेवाड़ भारतीय इतिहास का एक ऐसा क्षेत्र रहा है जिसने प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक काल तक अपनी सामरिक, भौगोलिक एवं राजनीतिक विशेषताओं के कारण विशिष्ट स्थान प्राप्त किया। अरावली पर्वतमाला, दुर्गम घाटियाँ, सुदृढ़ दुर्ग, खनिज संपदा तथा स्वतंत्रता-प्रिय शासकों ने मेवाड़ को युद्धों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र बनाया। विशेष रूप से महाराणा कुम्भा, राणा सांगा तथा महाराणा प्रताप के काल में मेवाड़ विदेशी आक्रमणों के विरुद्ध प्रतिरोध का प्रमुख केन्द्र रहा। प्रस्तुत शोध आलेख में युद्धों की दृष्टि से मेवाड़ के ऐतिहासिक महत्व का विश्लेषण प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के आधार पर किया गया है।

शब्द कुंजी – मेवाड़, युद्ध, सामरिक महत्व, अरावली, चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, महाराणा प्रताप, हल्दीघाटी।

प्रस्तावना – राजस्थान का मेवाड़ क्षेत्र भारतीय इतिहास में वीरता, स्वाधीनता और सैन्य संगठन का प्रतीक माना जाता है। इसकी भौगोलिक स्थिति तथा प्राकृतिक संरचना ने इसे उत्तर भारत, गुजरात तथा मालवा के मध्य एक महत्वपूर्ण सामरिक क्षेत्र बना दिया। यही कारण था कि दिल्ली सल्तनत, गुजरात सल्तनत तथा मुगल शासकों ने समय-समय पर मेवाड़ को अपने अधीन करने का प्रयास किया, किन्तु मेवाड़ ने सदैव सशक्त प्रतिरोध प्रस्तुत किया।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. युद्धों की दृष्टि से मेवाड़ के सामरिक महत्व का अध्ययन करना।
2. मेवाड़ की भौगोलिक संरचना एवं प्राकृतिक संसाधनों का सैन्य दृष्टि से विश्लेषण करना।
3. मेवाड़ के दुर्गों एवं पर्वतीय मार्गों की रक्षा व्यवस्था का अध्ययन करना।
4. महाराणा प्रताप एवं अन्य मेवाड़ी शासकों की सैन्य रणनीतियों का मूल्यांकन करना।

शोध पद्धति– यह अध्ययन ऐतिहासिक शोध पद्धति पर आधारित है। इसमें अभिलेखों, समकालीन ग्रंथों, फारसी स्रोतों, पुरातात्त्विक साक्ष्यों तथा आधुनिक इतिहासकारों के शोध का विश्लेषण किया गया है।

युद्धों के लिए मेवाड़ का ऐतिहासिक महत्व

1. सामरिक भौगोलिक स्थिति– मेवाड़ उत्तर भारत को गुजरात तथा पश्चिमी भारत से जोड़ने वाले प्रमुख मार्गों पर स्थित था। दिल्ली से गुजरात जाने वाले व्यापारिक एवं सैन्य मार्ग इस क्षेत्र से होकर गुजरते थे। इस कारण जो शक्ति मेवाड़ पर नियंत्रण स्थापित करती, वह उत्तर-पश्चिम भारत के महत्वपूर्ण मार्गों पर प्रभाव स्थापित कर सकती थी।

2. अरावली पर्वतमाला का योगदान – अरावली विश्व की प्राचीनतम पर्वत श्रेणियों में से एक है। इसकी ऊँची पर्वतमालाएँ, संकरी घाटियाँ और घने वन मेवाड़ को प्राकृतिक सुरक्षा प्रदान करते थे। हल्दीघाटी, देवर तथा दिवेर जैसे दर्रों में बड़ी सेना का संचालन कठिन था, जिससे छोटी मेवाड़ी सेना भी प्रभावी प्रतिरोध कर सकती थी।

महाराणा प्रताप ने अरावली की प्राकृतिक संरचना का उपयोग छापामार (Guerrilla Warfare) युद्ध के लिए किया। इससे मुगल सेना को रसद, संचार एवं सैन्य संचालन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

3. दुर्गों का सामरिक महत्व– मेवाड़ के दुर्ग केवल निवास स्थान नहीं थे, बल्कि युद्धकालीन रक्षा केन्द्र थे।

(क) चित्तौड़गढ़ दुर्ग

भारत का सबसे विशाल पहाड़ी दुर्ग।

दिल्ली एवं गुजरात से आने वाले आक्रमणों को रोकने का प्रमुख केन्द्र।

1303, 1535 तथा 1568 ई. के प्रसिद्ध घेराव इसकी सामरिक महत्ता को सिद्ध करते हैं।

(ख) कुंभलगढ़ दुर्ग

अरावली पर्वतमाला में स्थित।

लगभग 36 किमी लंबी प्राचीर।

महाराणा प्रताप का जन्मस्थान।

संकट के समय मेवाड़ की वैकल्पिक राजधानी।

(ग) गोगुंदा एवं चावण्ड– हल्दीघाटी युद्ध के पश्चात महाराणा प्रताप ने चावण्ड को राजधानी बनाया तथा पर्वतीय क्षेत्रों से मुगलों के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा।

4. प्राकृतिक संसाधन एवं खनिज– मेवाड़ प्राचीन काल से ताँबा, सीसा, चाँदी तथा जस्ता के लिए प्रसिद्ध रहा है। जावर तथा दरीबा की खदानें युद्ध सामग्री एवं आर्थिक संसाधनों का महत्वपूर्ण आधार थी। इन खनिजों से शस्त्र निर्माण तथा राज्य की आर्थिक शक्ति को बल मिलता था।

5. गुरिल्ला युद्ध प्रणाली– महाराणा प्रताप ने परम्परागत युद्ध के साथ-साथ गुरिल्ला युद्ध प्रणाली अपनाई। छोटी टुकड़ियाँ पर्वतीय मार्गों से निकलकर मुगल सेना पर अचानक आक्रमण करती थी और पुन: जंगलों में लौट जाती थी। इस रणनीति ने विशाल मुगल सेना की प्रभावशीलता को

कम कर दिया।

6. स्थानीय जनजातियों का योगदान– भील समुदाय ने मेवाड़ की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने:
दुर्गम मार्गों की जानकारी दी,
गुप्तचर कार्य किया,
रसद उपलब्ध कराई,
छापामार युद्ध में सहयोग दिया।
इस सहयोग के कारण मुगल सेना मेवाड़ के पर्वतीय क्षेत्रों में स्थायी नियंत्रण स्थापित नहीं कर सकी।

7. स्वतंत्रता की परम्परा– मेवाड़ के शासकों ने विदेशी अधीनता स्वीकार करने के स्थान पर संघर्ष का मार्ग चुना। राणा सांगा तथा महाराणा प्रताप भारतीय इतिहास में राष्ट्रीय स्वाभिमान एवं स्वतंत्रता के प्रतीक माने जाते हैं। मेवाड़ का संघर्ष केवल क्षेत्रीय नहीं बल्कि राजनीतिक स्वतंत्रता का संघर्ष था।

निष्कर्ष– युद्धों की दृष्टि से मेवाड़ का महत्व उसकी भौगोलिक स्थिति, अरावली पर्वतमाला, दुर्ग प्रणाली, खनिज संसाधनों, स्थानीय जनजातीय सहयोग तथा स्वतंत्रता-प्रिय शासकों के कारण अत्यंत विशिष्ट था। यही कारण है कि अनेक शक्तिशाली साम्राज्यों के निरंतर प्रयासों के बावजूद मेवाड़ लंबे समय तक स्वतंत्रता एवं प्रतिरोध का केन्द्र बना रहा। मध्यकालीन भारतीय सैन्य इतिहास में मेवाड़ का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. श्यामलदास. वीर विनोद, भाग-1. उदयपुर: राजस्थानी ग्रंथागार (पुनर्मुद्रित संस्करण), 1996, पृ. 184-235.
2. श्यामलदास. वीर विनोद, भाग-2. उदयपुर: राजस्थानी ग्रंथागार, 1996, पृ. 512ह578.
3. ओझा, गौरीशंकर हीराचंद. उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग-1. अजमेर: वैदिक यंत्रालय, 1928, पृ. 298-325.
4. ओझा, गौरीशंकर हीराचंद. उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग-2. अजमेर: वैदिक यंत्रालय, 1931, पृ. 120-168.
5. सोमानी, रामवल्लभ. History of Mewar: From Earliest Times to 1751 A.D. जयपुर: राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, 1976, चच. 182-246.
6. टॉड, जेम्स. Annals and Antiquities of Rajasthan, Vol. I. London: Smith, Elder & Co., 1829 (भारतीय पुनर्मुद्रण),pp.. 236-289.
7. टॉड, जेम्स.Annals and Antiquities of Rajasthan, Vol. II. London: Smith, Elder & Co., 1832 (भारतीय पुनर्मुद्रण), चच. 590-635.
8. अबुल फजल. अकबरनामा, खंड-3 (अनुवाद: एच. बेवरिज). New Delhi: Low Price Publications (Reprint), pp. 112–132.
9. अबुल फजल. आईन-ए-अकबरी, खंड-1 (अनुवाद: एच. ब्लॉचमैन). New Delhi: Low Price Publications, pp. 301–320.
10. चन्द्र, सतीश. मध्यकालीन भारत (Medieval India), भाग-II. नई दिल्ली: हर-आनन्द पब्लिकेशन्स, 2005, पृ. 108-120.
11. हबीब, इरफान. The Agrarian System of Mughal India (1556–1707). New Delhi: Oxford University Press, 1999, pp. 65–92.
12. हूजा, रीमा. A History of Rajasthan. New Delhi: Rupa Publications, 2006, pp. 453–472.
13. हूजा, रीमा. Maharana Pratap: The Invincible Warrior. New Delhi: Penguin Random House India, 2018, pp. 84–132.
14. खान, इक्तिदार आलम. Gunpowder and Firearms: Warfare in Medieval India. New Delhi: Oxford University Press, 2004, pp. 15–58.
15. रावत, गोपीनाथ शर्मा. राजस्थान का इतिहास. जयपुररू राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2008, पृ. 198-235.
16. शर्मा, दशरथ.Rajasthan Through the Ages, Vol. I जयपुर: Rajasthan State Archives, pp. 312–347.
17. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI). चित्तौड़गढ़ दुर्ग: संरक्षण एवं इतिहास. नई दिल्ली: Archaeological Survey of India, 2013, पृ. 25-58.
18. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI). कुंभलगढ़ दुर्ग: ऐतिहासिक एवं स्थापत्य अध्ययन. नई दिल्ली: Archaeological Survey of India, 2015, पृ. 41-72.
19. राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर. मेवाड़ संबंधी अभिलेख, संकलन-I, पृ. 45-98.
20. शर्मा, गोपीनाथ. Mewar and the Mughal Emperors उदयपुर: Mewar Research Institute, 1970, pp. 56–118.

****